अप्रैल २०१७

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

क्या हम कोई भिखारी हैं?

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकः
डिम्पल मेहता
वर्ष : ५ अंकः १
अखंड क्रमांकः ४९
अप्रैल २०१७
....
संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

क्या हम कोई भिखारी हैं? ?

संपादकीय

बाल मित्रों,

"भिखारी" शब्द सुनते ही रास्ते में आने-जाने वाले लोगों से कुछ माँगने वाले फटेहाल व्यक्ति की आकृति हमारे सामने आ जाती है। कोई पैसा माँगता है, तो कोई खाना। अर्थात् ऐसे माँगने वाले को हम अक्सर भिखारी कहकर संबोधित करते हैं।

क्या हमें भी कभी पता चलता है कि, हमें भी जो कुछ मिला है उससे असंतोष होने से हम हमेशा माँगते ही रहते हैं।

तो ज्ञानी की दृष्टि से क्या हम भिखारी हैं?

तो आइए, इस अंक को पढ़ें और समझें।

-डिम्पल मेहता

दादा जी कहते हैं...

ध्येय चूके कि भीख घुसी

दादाश्री : किसी भी चीज़ के लिए भिखारीपना क्या है? अगर जलेबी नहीं मिले तो, "थोड़ी सी जलेबी लाओ न!" "थोड़ी सी जलेबी लाओ न!" ऐसा करेंगे। छोड़ न भाई! अनंत जन्मों से जलेबी खाई ही है फिर भी अभी भिखारीपना दिखा रहे हो? इंसान को जिसकी बहुत इच्छा हो उसे उसका भिखारीपना होता है!

"यहाँ से कुछ मिलेगा, यहाँ से कुछ मिलेगा।" जहाँ देखो वहाँ इच्छा। अरे भाई! दो हाथ वालों के पास कुछ भी नहीं होता! वह तो हज़ार हाथ वाले के पास होता है। लोग तो दो हाथ वालों से आशा रखते हैं, शर्म नहीं आती? जिसके सभी लालच खत्म हो गए, उसके सभी रोग मिट गए। डॉक्टर आए तो लोग कहेंगे, "मेरे काम आएगा", वकील आए तो कहेंगे, "मेरे काम आएगा, जान-पहचान कर लो", अरे भाई! ऐसा लालच? डॉक्टर क्या काम आएगा? अभी बीमार पड़ जाऊँ, ऐसा तो नहीं है? तो कहेगा, "नहीं, जब किसी दिन बीमार पड़ूँगा तब काम आएगा।"

इंसान को ऐसा भिखारीपना नहीं होना चाहिए। सबकुछ खाना-पीना, सब करना लेकिन भिखारीपना नहीं। भिखारीपना एक तरह की लाचारी है।

जिन्हें इच्छाएँ हैं, "यह चाहिए, वह चाहिए", वे सब भिखारी कहे जाएँगे। "कोई मुझे स्वयं बुलाए, मेरा ध्यान रखे, मेरे लिए उल्टा न बोले, ऐसा क्या करूँ कि मेरी तारीफ करे, मुझे बहुत पैसे मिल जाएँ ताकि मैं यह ले लूँ, वह ले लूँ।" सबकुछ हो फिर भी यह ले लूँ, वह ले लूँ ऐसा करता रहता है। ऐसी अनेक इच्छाएँ। इसलिए किसी भी तरह की इच्छा नहीं करनी चाहिए! इच्छा हो जाए तो निकाल देनी है। यह तो सारा दिन भीख, भीख और भीख! क्या कभी किसी को भीखरहित देखा है? अंत में मंदिर बनवाने की भी भीख होती है, अर्थात् मंदिर बनवाने में पड़ता है। क्योंकि कुछ नहीं दिखता तो कीर्ति के लिए सब करता है! अंत में भीख के कारण ध्येय से चूक जाता है।

यह तो नई ही बात है!

जिसे किसी से कुछ भी नही चाहिए, उसे शांति होती है, समाधि होती है।

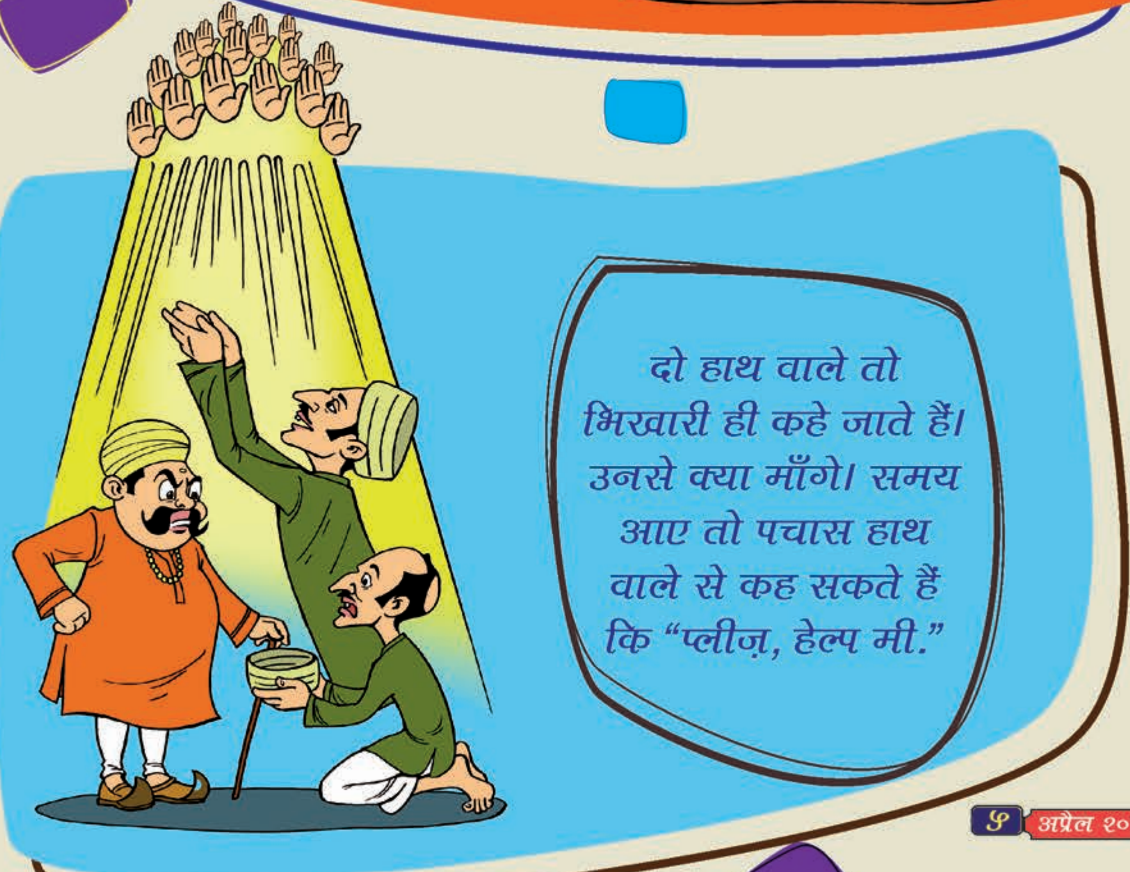
दो हाथ वाले तो भिखारी ही कहे जाते हैं। उनसे क्या माँगे। समय आए तो पचास हाथ वाले से कह सकते हैं कि "प्लीज़, हेल्प मी."

पक्षी का पिंजरा

"टु हु... टु हु..." दो पक्षियों के मधुर स्वर से पूरा जंगल गूँज उठा था। क्या पता वे पक्षी कहाँ से आए थे! एक छोटा और एक बड़ा। जैसे एक ही परिवार के दो बच्चे। उनकी सुंदरता तो अद्भुत थी, लेकिन उनका स्वर तो उससे भी अच्छा था।

धीरे-धीरे उन पक्षियों के कलरव का मधुर स्वर जंगल से आसपास के गाँवों तक पहुँच गया। जो भी उनका स्वर सुनता, वह उनकी तारीफ करते नहीं थकता। जल्दी ही यह बात वहाँ के राजा तक पहुँच गई।

राजा तो संगीत प्रेमी था। बस वह तो एक छोटी सी सेना लेकर जंगल में पहुँच गया। एक सुंदर से सोने के पिंजरे में तरह-तरह के फल और मोती रखे। यह देखकर छोटा पक्षी ललचाया। बड़े पक्षी ने उसे समझाया, "ये फल इस जंगल के नहीं हैं। हमें सब आराम से मिल ही रहा है तो इस भीख में क्यों पड़ें?" लेकिन छोटा अपनी इच्छा रोक नहीं पाया, और अंत में बड़ा भी अनिच्छा से छोटे के साथ पिंजरे में कैद हो गया।

राजदरबार में पक्षियों के आगमन की घोषणा हुई। वहाँ एक संगीत संध्या का आयोजन किया गया। समारोह के आरंभ में पक्षियों का परिचय देते हुए मंत्री ने पक्षियों के सुर की जी भरकर तारीफ की। छोटा पक्षी तो अपनी ऐसी प्रसंशा सुनकर फूला नहीं समाया और गाने लगा। पूरी सभा मंत्र-मुग्ध हो गई। बड़े को तो इस प्रसंशा में कोई रुचि ही नहीं थी। अपनी गायकी का ऐसा प्रदर्शन उसे मंजूर नहीं था। इसीलिए वह चुप रहा।

छोटे पक्षी की गायकी से प्रसन्न होकर राजा ने उसके लिए एक सोने का सुंदर मुकुट बनवाया।

छोटे ने बड़े से कहा कि, "अरे वाह! हमारे तो भाग्य खुल गए। राजा के महल में इतना मान-सम्मान! आप भी गाओ, तो आपको भी मुकुट मिल जाएगा।" बड़ा नाराज़ होकर बोला, "भाग्य खुल गए? अरे! हम तो भिखारी बन गए। पहले कितने सुख से घूमते थे, कितना मुक्त जीवन था, हमारा। और यह तो कैसा बंधन? यह मान-मुकुट, राजसी ठठ, किसी की वाह-वाही या

इनाम। मुझे ऐसी कोई इच्छा नहीं है। मुझे तो मुक्ति चाहिए।"

लेकिन छोटे को तो बड़े की बात समझ में नहीं आई। दूसरे दिन भी छोटे पक्षी ने अपना श्रेष्ठ संगीत सुनाया और बड़ा पक्षी शांत रहा। राजा ने बड़े पक्षी को उड़ा देने का आदेश दिया। अपनी स्वतंत्रता से बढ़कर, बड़े पक्षी के लिए और कुछ भी नहीं था, उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था।

दिन बीते। राजा के दरबार में बारबार संगीत सभाओं का आयोजन होता, जिसमें छोटा पक्षी अपने स्वर से सभी के दिल जीत लेता। इन सभाओं में देश-विदेश के संगीत प्रेमियों को भी निमंत्रित किया जाता था। पक्षी के साथ-साथ राजा की कीर्ति भी फैलने लगी। पक्षी के स्वर की और राजा के आदर-सत्कार की वाह-वाह होने लगी। देश-विदेश से लोग संगीत सुनने आते और राजा के लिए तरह-तरह के उपहार लाते। राजा और छोटे पक्षी दोनों को वाह-वाह रूपी भोजन अच्छा लगने लगा।

लेकिन यह सिलसिला ज्यादा नहीं टिका। कुछ ऐसा हुआ कि छोटे पक्षी का संगीत बेसुरा होने लगा। पक्षी के स्वर का जादूई असर कम होने लगा। दूसरी ओर राजा का प्रभाव भी कम होने लगा। जिस प्रभावशाली राजा की बात लोग तुरंत सुन लेते थे, उस राजा के प्रति लोगों का सम्मान कम होने लगा। राजा के आदेश का पालन लोग उल्लास से नहीं बल्कि अनमने से करते।

राजा उलझन में पड़ गया, "ऐसा क्या हो गया कि लोगों की नज़रों में मुझे पहले जैसा आदर नहीं दिखता? और इस पक्षी को क्या हो गया है! वैद्य ने बताया कि वह बिल्कुल स्वस्थ है। तो फिर उसका स्वर इतना बेसुरा क्यों हो गया है?" राजा ने अपने प्रश्नों के समाधान के लिए अपने विश्वासपात्र विद्वान मंत्री को बुलवाया।

मंत्री ने शांति से राजा की सभी बातें सुनीं और कहा, "राजा जी, मुझे थोड़ा समय दीजिए। मैं आपकी समस्या का समाधान ज़रूर ले आऊँगा।"

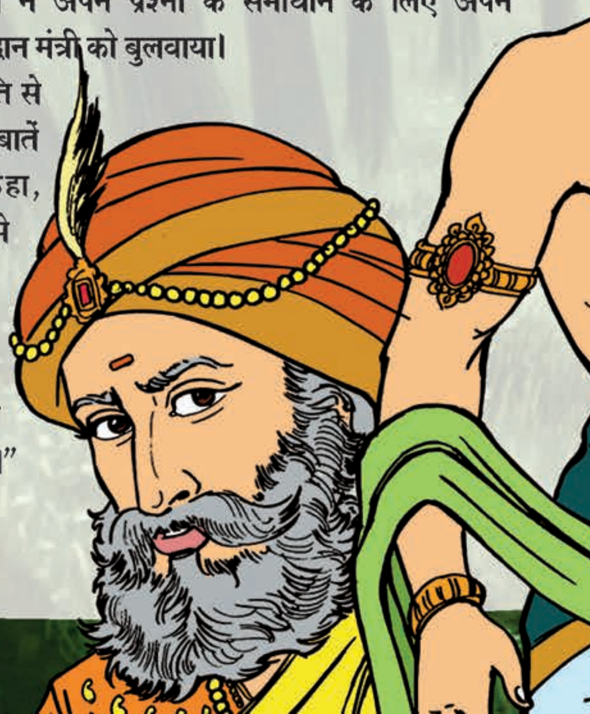

मंत्री बहुत होशियार थे। राजा और पक्षी का निरीक्षण करके, वे समस्या का कारण ढूँढने में लग गए।

एक दिन राज दरबार लगा हुआ था। दरबार में अचानक एक भिखारी घुस आया। वह सभी के पास जाकर भीख माँगने लगा। राजा ने सिपाहियों को बुलाकर, भिखारी को दरबार से बाहर ले जाने का आदेश दिया।

"राजा जी, रुको" कहकर भिखारी ने अपना भेष बदला। वह मंत्री था।

राजा आश्चर्य चकित होकर बोला, "अरे मंत्री जी आप? इतने बड़े विद्वान मंत्री होकर आप भीख क्यों माँग रहे हो?"

"राजा जी, इस प्रश्न का जवाब देने से पहले मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि, आप दरबार में उपस्थित सब को थोड़ी देर के लिए छुट्टी दे दीजिए।"

अब दरबार में सिर्फ राजा और मंत्री ही उपस्थित थे।

"यह सब क्या है मंत्री जी? इस तरह भीख माँगने का क्या प्रयोजन है?" राजा की उलझन स्वाभाविक थी।

"राजा जी, माफ करना। यदि एक विद्वान भिखारी बनकर भीख माँगे तो वह उपहास का पात्र बनता है, तो यदि एक समृद्ध राजा भीख माँगे तो क्या लोग उसको आदर दे पाएँगे?"

"क्या कहना चाहते हो, मंत्री जी?" राजा की आवाज़ में गंभीरता थी।

"राजा जी, जो औरों से अपने सुख की माँग करता है, वह भिखारी नहीं तो और क्या कहा जाएगा? जैसे-जैसे आपको देश-विदेश के लोगों से मान और उपहार मिलते गए, वैसे-वैसे आपको और ज्यादा पाने का लालच बढ़ता गया। जिसके मन में ऐसा लालच जाग जाता है, धीरे-धीरे उसका प्रभाव कम होने लगता है। आपके साथ भी ऐसा ही हुआ है। इसीलिए राज्य के लोगों की नज़रों में आपके प्रति आदर कम हो गया है।"

मंत्री जी की बात कड़वी थी, लेकिन राजा को स्वीकार्य थी, "लेकिन, उस छोटे से पक्षी का स्वर बेसुरा होने का क्या कारण था?"

"वही भिखारीपना! मुक्तता से गाने के बदले वह मान मिलने की इच्छा से गाने लगा। ज़रूरत से ज्यादा देखभाल और प्रसंशा प्राप्त करने की इच्छा से वह हमेशा बोझ और तनाव में रहने लगा और इस तरह अपनी आँखों की चमक और आवाज़ की मिठास खो बैठा।" मंत्री जी ने समझाया।

मंत्री की बात राजा के गले उतरी। समस्या का समाधान देने के लिए राजा ने मंत्री का आभार व्यक्त किया और उन्हें विदा किया।

अपने सिंहासन पर बैठकर राजा मंत्री की कही हुई बात का चिंतन कर रहा था। तभी उन्हें पिंजरे में कैद पक्षी का उदास स्वर सुनाई दिया। पिंजरे में कैद पक्षी अपनी इच्छाओं से बोझिल, बड़े पक्षी की मुक्ति को याद कर रहा था। बड़े पक्षी की कही हुई, मुक्त जीवन जीने की बात अब उसे समझ में आ गई थी।

पिंजरे के पास जाकर राजा ने कड़ी खोल दी। छोटे से पक्षी की आँखों में ग़ज़ब की चमक आ गई। इच्छा के पिंजरे में कैद पक्षी को राजा ने मुक्त कर दिया, और उसी समय उन्होंने भी एक अनोखी मुक्ति का अनुभव किया।

तो मित्रों, जब इच्छा उत्पन्न होती है तब हम अपना सुख खो देते हैं न? जिसे यह चाहिए और वह चाहिए, यहाँ से कुछ मिलेगा, वहाँ से कुछ मिलेगा, ऐसा रहता है, उसे भिखारी कहा जाता है। तो चलो हम इच्छा मुक्त होकर मुक्ति का सुख चखते हैं... क्या लगता है?

जादूई शक्ति
आठ बज गए थे और प्रियंका परियों की दुनिया में जाने के लिए रज़ाई ओढ़कर लेट गई। मम्मी ने फेरी-टेल्स का पहला पेज खोला।
दूर एक परियों का देश था। वहाँ रहने वाली परियाँ बहुत सुंदर थीं। एक दिन परी रानी ने अपनी तीन प्रिय परियों को महल में बुलाया।
झारा, रूबी और फ्लोरेन्स, हमें एक बहुत ही महत्वपूर्ण उद्देश्य पूरा करना है। दूर एक मेघधनुष महल है। आपको सूर्यास्त से पहले उस महल में पहुँचना पड़ेगा।
परी रानी ने तीनों परियों को मेघधनुष महल तक पहुँचने के लिए अलग नक्शे दिए। तीनों के नक्शों में अंतर था। दूरी समान थी, लेकिन दिशा अलग थी। अपने-अपने नक्शे लेकर झारा, रूबी और फ्लोरेन्स निकल पड़ीं।

झारा ने रास्ते में एक परी देखी, जिसके हाथ में मोतियों के बहुत सारे हार थे।
यह कैसे मोती हैं? मोतियों में ऐसी चमक तो मैंने कभी देखी ही नहीं है।
तुम्हारे पास इतने सारे हार हैं, क्या तुम मुझे एक हार दोगी? परी ने तुरंत ही मोती का एक हार झारा को दे दिया।
रास्ते में झारा को बहुत सारी परियाँ दिखीं, जिनके पास लुभाने वाली सुंदर चीज़ें थी।
उसने हर एक परी के पास जाकर चीज़ें माँगी। उन्हें अपने पंखों में भरकर वह मेघधनुष महल की ओर बढ़ी।
रूबी के साथ भी ऐसा ही हुआ। रास्ते में उसे भी ऐसी परियाँ दिखीं जिनके पास नवीन सुंदर आकर्षक चीज़ें थी।
परियों के लिए भी दुर्लभ हो यह ऐसा खजाना है। इस खजाने को यदि मैं नहीं लूँगी तो मूर्ख कही जाऊँगी।
रूबी ने परियों से माँग की और उन चीज़ों को लेकर मेघधनुष महल की तरफ प्रयाण किया।
उस तरफ फ्लोरेन्स को भी अपने रास्ते में परियाँ दिखीं जिनके पास चमकीले हीरे, माणिक और रत्नजड़ित गहने थे। लेकिन एक क्षण के लिए भी फ्लोरेन्स ललचाई नहीं और मुक्तता से अपने ध्येय की ओर आगे बढ़ी।
मेरा लक्ष्य है कि मुझे सूर्यास्त से पहले मेघधनुष महल में पहुँचना है। यदि मैं किसी भी तरह के लालच में फँस जाऊँगी तो अपना ध्येय चूक जाऊँगी।
यह विचार आते ही फ्लोरेन्स के अंदर एक अजीब जादुई शक्ति उत्पन्न हुई।

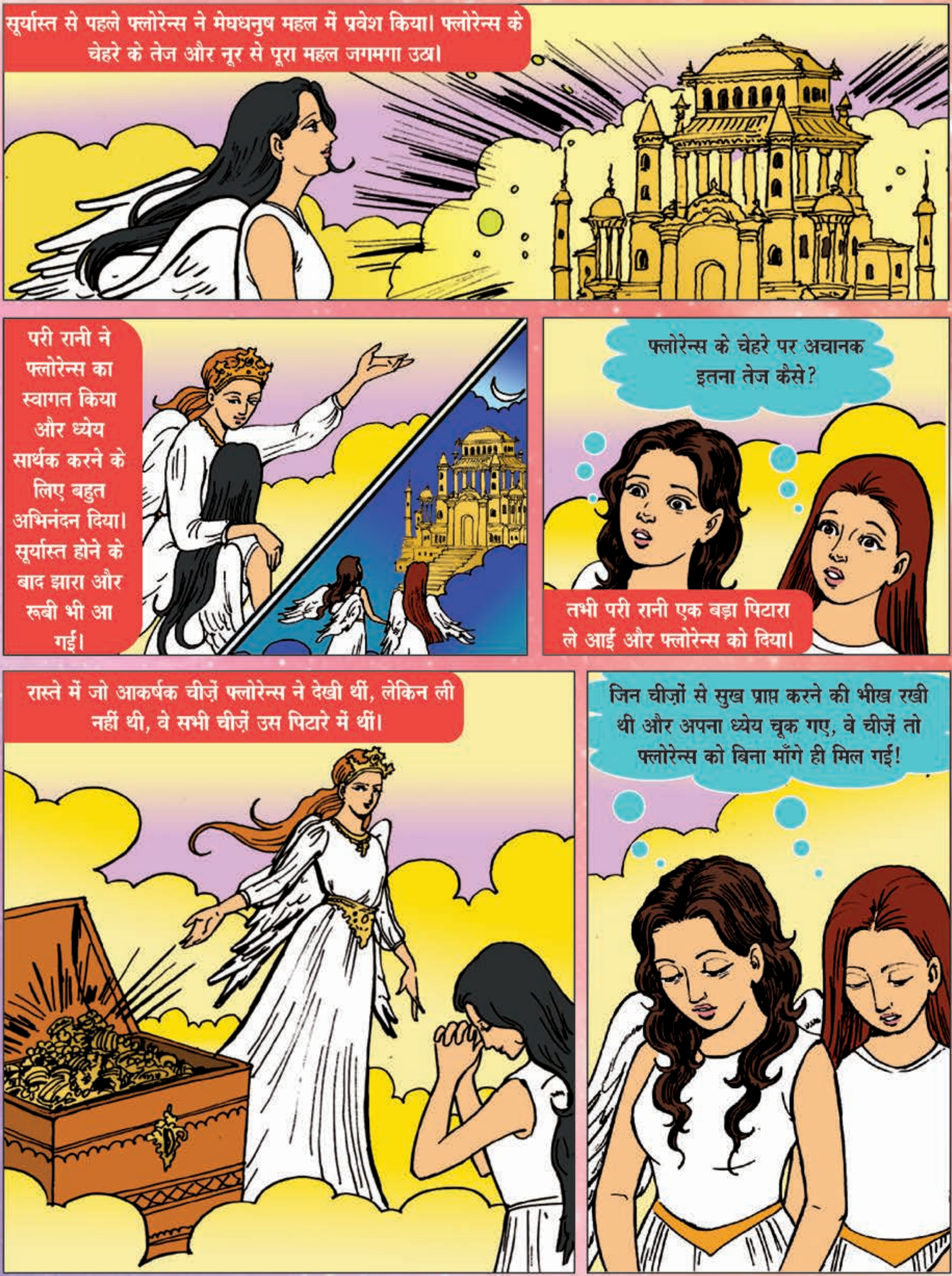
सूर्यास्त से पहले फ्लोरेन्स ने मेघधनुष महल में प्रवेश किया। फ्लोरेन्स के चेहरे के तेज और नूर से पूरा महल जगमगा उठा।
परी रानी ने फ्लोरेन्स का स्वागत किया और ध्येय सार्थक करने के लिए बहुत अभिनंदन दिया। सूर्यास्त होने के बाद झारा और रूबी भी आ गई।
फ्लोरेन्स के चेहरे पर अचानक इतना तेज कैसे?
तभी परी रानी एक बड़ा पिटारा ले आई और फ्लोरेन्स को दिया।
रास्ते में जो आकर्षक चीज़ें फ्लोरेन्स ने देखी थीं, लेकिन ली नहीं थी, वे सभी चीज़ें उस पिटारे में थीं।
जिन चीज़ों से सुख प्राप्त करने की भीख रखी थी और अपना ध्येय चूक गए, वे चीज़ें तो फ्लोरेन्स को बिना माँगे ही मिल गई!

"परी रानी" का खिताब किसे दिया जाए, उस उद्देश्य के लिए मैंने आपकी परीक्षा ली थी। जिस परी का ऐश्वर्य सब से ज्यादा होगा, वही "परी रानी" की पदवी प्राप्त कर सकेगी।

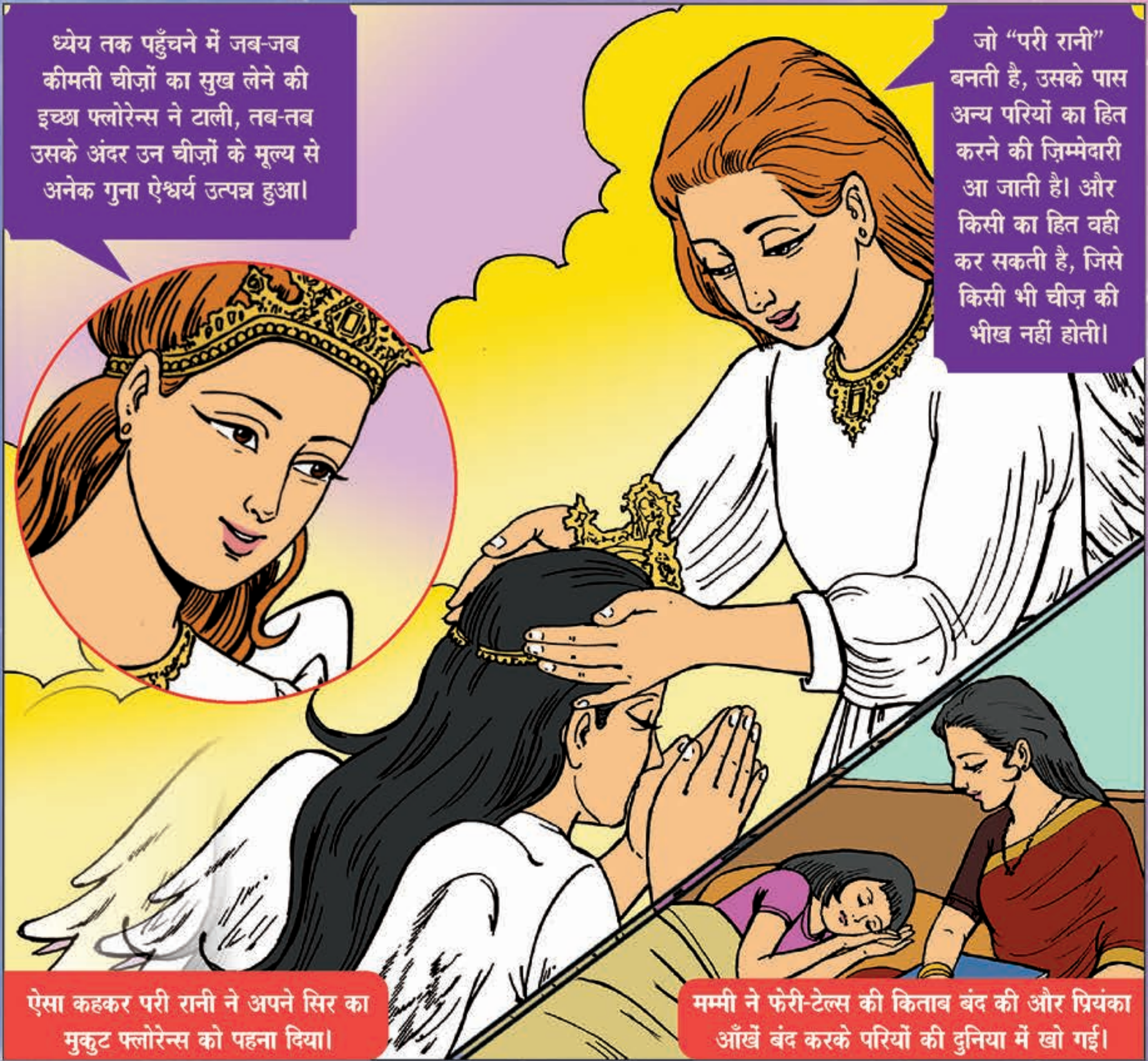
ध्येय तक पहुँचने में जब-जब कीमती चीज़ों का सुख लेने की इच्छा फ्लोरेन्स ने टाली, तब-तब उसके अंदर उन चीज़ों के मूल्य से अनेक गुना ऐश्वर्य उत्पन्न हुआ।
जो "परी रानी" बनती है, उसके पास अन्य परियों का हित करने की ज़िम्मेदारी आ जाती है। और किसी का हित वही कर सकती है, जिसे किसी भी चीज़ की भीख नहीं होती।
ऐसा कहकर परी रानी ने अपने सिर का मुकुट फ्लोरेन्स को पहना दिया।
मम्मी ने फेरी-टेल्स की किताब बंद की और प्रियंका आँखें बंद करके परियों की दुनिया में खो गई।

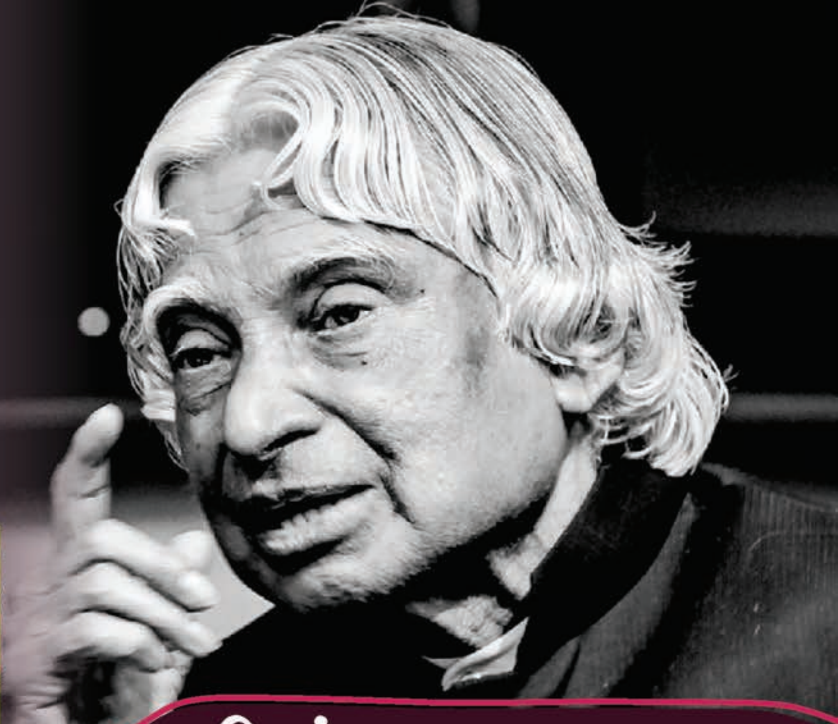

जीवंत उदाहरण

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भारतवासियों के दिल और दिमाग पर अपनी अमर छाप छोड़ गए हैं। डॉ. कलाम एक विद्वान, विचारक, साइन्टिस्ट और उच्च कोटि के व्यक्ति थे। भारतीय मिसाइल मिशन में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है, और इसीलिए वे "मिसाइल मैन" के नाम से जाने जाते हैं। ८३ साल की उम्र में २७ जुलाई २०१५ के दिन उनका देहविलय हुआ।

जिस व्यक्ति ने ५० साल से ज्यादा समय पब्लिक सर्विस में बिताया और जो भारत के प्रेसिडेन्ट भी रह चुके थे, उनके पास खुद की कही जाएँ ऐसी कितनी चीज़ें थीं, पता है? सिर्फ एक घड़ी, छः शर्टें, चार पैन्ट, तीन सूट, एक जोड़ी जूता और २५०० पुस्तकें। डॉ. कलाम के पास खुद की कोई जायदाद, फ्रिज़, टी.वी., गाड़ी या ए.सी. नहीं था।

डॉ. कलाम का आधुनिक टेक्नॉलोजी के प्रति लगाव सभी जानते हैं। लेकिन वे टेक्नॉलोजी के समाचार रेडियो या अखबारों में से लेते थे। उनके घर में टी.वी. नहीं था।

डॉ. कलाम ने अपना पूरा जीवन बहुत ही सादे ढंग से व्यतीत किया था। तामिलनाडु के रामेश्वर में १५ अक्तूबर के दिन जन्मे डॉ. अब्दुल कलाम, बचपन में जब पढ़ाई करते थे तब घर-घर में अखबार बेचते थे। गरीबी में पले-बढ़े होने के बावजूद भी वे राष्ट्रपति के पद तक पहुँच पाए। यह बात हमारे लिए प्रेरणादायक है।

डॉ. कलाम के आदर्श ही उनकी पहचान थे। वे कभी किसी से उपहार स्वीकार नहीं करते थे। राष्ट्रपति बनने के बाद फॉरेन गवर्नमेन्ट्स उन्हें उपहार देतीं लेकिन वे उन सभी उपहारों को भारतीय गवर्नमेन्ट के तोशा खाने में भेज देते थे। कभी खुद के उपयोग के लिए उन्होंने एक भी उपहार अपने पास नहीं रखा था और पूरे जीवन में इस नियम का बहुत ही पवित्रता और कड़ाई से पालन किया था।

मित्रों, डॉ. कलाम के आदर्श कितने अद्भुत थे! प्रेसिडेन्ट ऑफ इन्डिया होने के बावजूद उन्हें किसी भी चीज़ या वैभव की इच्छा नहीं थी। और प्योर जीवन जीकर वे अनेकों के लिए उदाहरण बने।

और अंत में...

आज का कम्प्यूटराइज़्ड जमाना और ऊपर से मोबाइल गेम्स का भूत! तो चलो, देखते हैं तीन अलग-अलग पर्सनैलिटी को... तीनों पर इसका कितना असर होता है!

राजा

राजा को मोबाइल गेम के बारे में पता चले तो वह मोबाइल मंगवाएँगे। उस पर गेम खेलेंगे। और फिर मोबाइल बाजू में रखकर चले जाएँगे। उन्हें उसकी ज्यादा कीमत नहीं होती।

भिखारी

भिखारी को पता चलने पर वह भी मोबाइल गेम खेलता है। खेलने के बाद उसे ऐसे सँभालकर रखता है कि कोई ले ना जाए। और यदि कोई ले गया तो गिड़गिड़ाता है कि, "प्लीज़, मुझे मोबाइल दो न। मुझे गेम खेलना है। प्लीज़ दो। मैं उसके बगैर जी नहीं पाऊँगा। वह नहीं होगा तो मैं क्या करूँगा?"

ज्ञानी

ज्ञानी को पता चला तो जान लेते हैं और फिर शांति से खुद के सुख में रहते हैं। उसके बारे में और अधिक जानकारी की तमन्ना भी नहीं होती फिर खेलने की तो बात ही कहाँ रही! वे तो खुद के अनंत सुख में ही रहते हैं।

तारण

ज्ञानी कहते हैं, "आप गेम नहीं खेलते बल्कि गेम आपको खिलाती है। इतना अधिक लाचार बना देती है कि आप उसके बगैर रह नहीं सकते!

इसी तरह संसार में, संसारी सुख भोगते-भोगते आप खुद ही उसके भोग बन जाते हो। मोह आपको अपने वश में कर लेता है।

ऐसे सुख के लिए क्यों भीख माँगते हो? जीना ही है तो राजा की तरह जीओ! मिला तो भोग लिया, फिर छोड़ दिया। उसे दूसरी बार याद भी नहीं करना चाहिए, तो फिर उसे वापस पाने के लिए गिड़गिड़ाने की ज़रूरत ही कहाँ है?"

क्या हम कोई भिखारी हैं?

मीठी यादें

सीमंधर सिटी के एक महात्मा को अस्पताल से ऑपरेशन करवाकर वापस उनके घर पर लाया गया।

एक-दो दिन बाद सीमंधर सिटी के एक गार्डन में नीरू माँ के साथ सभी महात्माओं के प्रीतिभोज का आयोजन हुआ। सब भोजन कर रहे थे, इतने में वे महात्मा वहाँ आएँ।

जैसे ही नीरू माँ की नज़र उन महात्मा पर पड़ी, वैसे ही नीरू माँ ने उन्हें बुलाया, "यहाँ आओ।"

उन महात्मा ने नज़दीक आकर, नीरू माँ का "जय सच्चिदानंद" से अभिवादन किया और विनय से वहाँ खड़े रहें।

नीरू माँ ने कहा, "आप खड़े क्यों हैं, यहाँ बैठ जाओ।"

उन्हें सम्मानवश संकोच हो रहा था कि नीरू माँ के साथ खाने के लिए कैसे बैठें? लेकिन नीरू माँ ने उन्हें अपने साथ बिठाया। इतना ही नहीं, नीरू माँ ने अपने हाथ से उन्हें कौर खिलाकर प्रसादी भी दी।

यह देखकर सभी उपस्थितजन भावविभोर हो गए और वे महात्मा की तो अश्रुधारा बहने लगी।

ऐसे हैं हमारे नीरू माँ।

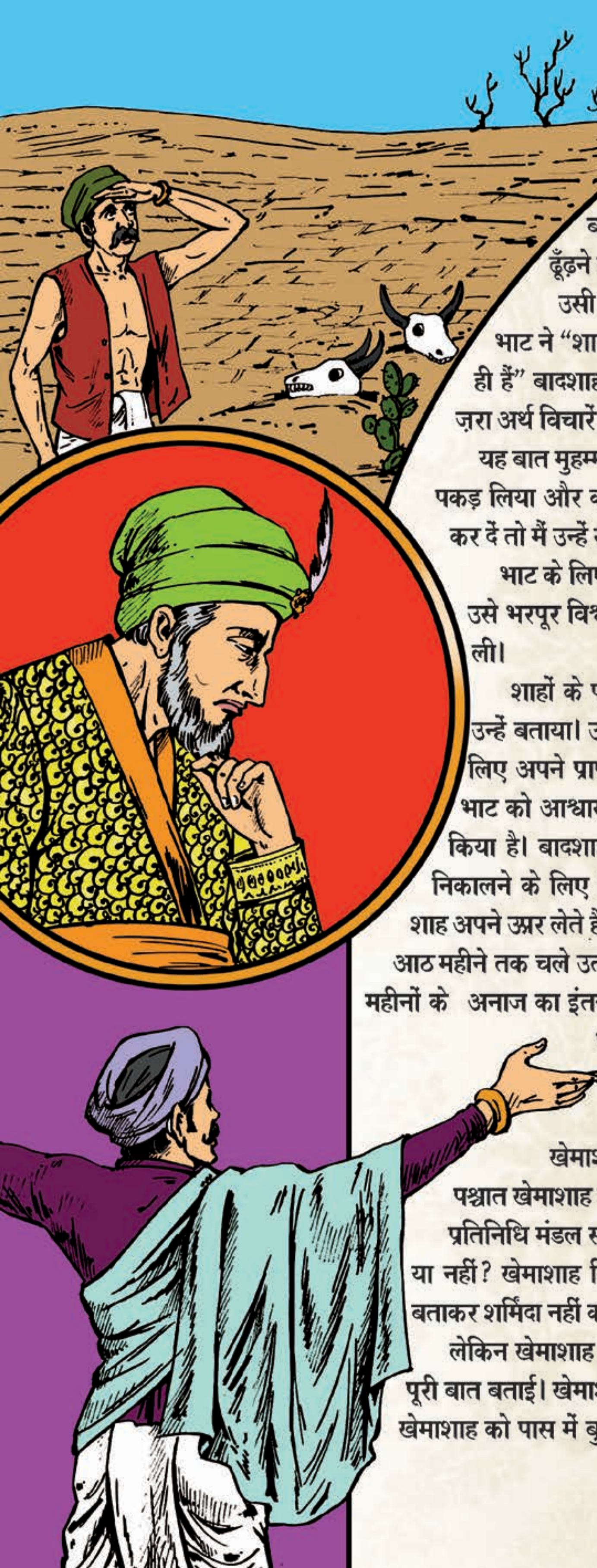

कई सालों पहले की बात है। गुजरात राज्य पर मुहम्मद बेगडा का राज था। एक बार राज्य में भयंकर अकाल पड़ा। मुहम्मद बेगडा को बहुत चिंता हुई। अकाल के निवारण के लिए कोई उपाय ढूँढ़ने की परेशानी में वे घिर गए।

उसी समय उनके दरबार में एक भाट आया। बातों ही बातों में भाट ने "शाह" लोगों के गुणगान की शुरुआत कर दी। "शाह तो शाह ही हैं" बादशाह या पादशाह, यह तो पा यानी चौथे भाग का शाह, और ज़रा अर्थ विचारें तो शाह में से जो निकल गया वह बादशाह।

यह बात मुहम्मद बेगडा को अच्छी नहीं लगी, लेकिन उन्होंने इस बात को पकड़ लिया और कहा, "ये शाह लोग यदि गुजरात के अकाल का निवारण कर दें तो मैं उन्हें सच्चा शाह कहूँगा।"

भाट के लिए यह बात एक चुनौती की तरह थी। शाहों की उदारता पर उसे भरपूर विश्वास था। इसलिए बादशाह की चुनौती उसने स्वीकार कर ली।

शाहों के पास जाकर उसने बादशाह द्वारा दी गई चुनौती के बारे में उन्हें बताया। उस समय के शाह बहुत स्वाभिमानी थे। अपनी प्रतिष्ठा के लिए अपने प्राण की आहुति देने में भी पीछे नहीं हटते, ऐसे थे! उन्होंने भाट को आश्वासन देते हुए कहा, "आपने जो कुछ किया है, वह ठीक ही किया है। बादशाह को जाकर हमारा संदेशा दे दो कि अकाल में से पार निकालने के लिए जितनी सुविधा चाहिए उतनी सुविधा देने की ज़िम्मेदारी शाह अपने ऊपर लेते हैं।"

आठ महीने तक चले उतना अनाज कुछ ही समय में इकट्ठा हो गया। बाकी के चार महीनों के अनाज का इंतज़ाम के लिए शाहों का एक प्रतिनिधि मंडल अहमदाबाद-पाटन की ओर रवाना हुआ। प्रत्येक स्थल पर शाहों का बहुत सम्मान हुआ। लौटते समय सौराष्ट्र के हडाळा गाँव में प्रतिनिधि मंडल आ पहुँचा। वहाँ खेमाशाह रहता था।

खेमाशाह ने स्वधर्मियों का भक्तिपूर्वक स्वागत किया। भोजन के पश्चात खेमाशाह ने प्रतिनिधि मंडल से उनके आगमन का कारण पूछा।

प्रतिनिधि मंडल सोच में पड़ गया कि खेमाशाह को सही कारण बताया जाए या नहीं? खेमाशाह बिल्कुल ही साधारण स्थिति के थे। इसलिए उन्हें कारण बताकर शर्मिंदा नहीं करना चाहते थे।

लेकिन खेमाशाह ने बहुत आग्रह किया। इसलिए प्रतिनिधि मंडल ने अपनी पूरी बात बताई। खेमाशाह के वृद्ध पिता देदराणी भी यह बात सुन रहे थे। उन्होंने खेमाशाह को पास में बुलाकर कहा, "संपत्ति का सदुपयोग करने का यह सुनहरा

अवसर है। गुजरात की जनता को राहत देने का और दान धर्म करने का मौका जाने मत देना।" खेमा ने कहा, "पिता श्री, आपकी आज्ञा शिरोधार्य है।"

खेमाशाह ने प्रतिनिधि मंडल के पास आकर कहा, "जनता के लिए बारह महीने का पूरा अनाज और जानवरों के लिए चारा मैं दूँगा। अब किसी के पास हाथ फैलाने की ज़रूरत नहीं है। इस काम के लिए आपको अब आगे जाने की भी ज़रूरत नहीं है। अब आप निश्चिंत हो जाओ और आराम करो।"

यह सुनकर प्रतिनिधि मंडल आश्चर्य चकित हो गया। खेमाशाह का रहन-सहन इतना साधारण था कि उनके पास अपार संपत्ति है, ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। खेमाशाह पूरे प्रतिनिधि मंडल को अपने धनभण्डार में ले गया। उसके धनभण्डार में अपार सोना और अगणित स्वर्णमुहरें थीं। प्रतिनिधि मंडल तो अचंभे से देखता ही रह गया।

सभी शाहों ने उनके पिता श्री की दानवृत्ति के लिए बहुत आभार व्यक्त किया और कहा, "खेमाशाह धन्य हैं। आपने तो सचमुच सभी शाहों की इज्जत बचा ली, आपने तो शाहों का नाम उज्जवल कर दिया। युगों तक इतिहास आपकी इस उदारता का गुणगान करता रहेगा।"

खेमाशाह की संपत्ति और दान के प्रताप से पूरा गुजरात महाभीषण दुष्काल से उबर गया। मुहम्मद बेगडा ने खेमाशाह का सम्मान करने के लिए एक समारोह का आयोजन किया और कहा, "शहंशाहों के भी शहंशाह यह शाह हैं। उनकी निस्वार्थ दान वृत्ति को मैं सच्चे दिल से सलाम करता हूँ और उनका भविष्य उज्जवल बने ऐसी प्रार्थना करता हूँ।"

ऐतिहासिक गौरवगाथा

बरोड़ा त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव में बच्चों एवं महात्माओं द्वारा "त्रिमंदिर" थीम पर प्रस्तुत म्युज़िकल ड्रामा की झलक...

समर कैम्प की झलक

अंकलेश्वर १२ मार्च २०१७

दुबई १७ मार्च २०१७

Akram Express
April 2017
Year : 5, Issue : 1
Conti. Issue No.: 49

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

दोस्तों, आपके लिए एक खुश खबर है...

इन्तज़ार करने के दिन
कम हो रहे हैं।

कुछ ही समय में आपको
आपकी फेवरीट वेबसाइट
नए कलर्स, नई
डिज़ाइन, नई गेम्स और
एक्टिविटीज़ के साथ
देखने मिलेगी।

अगले महीने से खास
देखते रहना।

Coming Soon

Kids.dadabhagwan.org

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

૧. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

૨. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ૮૧૫૫૦૦૭૫૦૦ पर **SMS** करें।

૧. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, ૨. पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ૩. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published